14

कलीसिया के लिए ईश्वरीय पदनाम

नये नियम को ध्यानपूर्वक पढ़ने से स्पष्ट होता है कि कलीसिया एक विशेष जीव होने के लिए रची गई थी। इसलिए, आत्मा की प्रेरणा पाए हुए लेखकों ने, इसे विशेष प्रकार से सम्बोधित किया। इन हवालों को तीन भागों में बांटा जा सकता है। उन्हें विशेष रूप से क्रिया, स्वामित्व, और सम्बन्ध को व्यक्त करने के लिए विशेष अर्थ से इस्तेमाल किया गया है। वे आत्मा के निर्देश से दिए गए हैं और ईश्वरीय उद्देश्य को पूरा करते हैं।

कलीसिया को सम्बोधित करने के लिए पवित्र आत्मा के द्वारा उपयोग किए गए वाक्यांशों को मात्र उदाहरण[1] ही नहीं मानना चाहिए। नया नियम मसीह के सच्चे अनुयायियों को उसकी ''कलीसिया,'' उसकी ''देह,'' तथा उसका ''राज्य'' कहता है। यह ईश्वरीय पदनाम[2] उस कलीसिया की, जिसे प्रभु ने स्थापित किया पहचान, विशेषता और वर्णन बताते हैं। इन पर ध्यानपूर्वक विचार कीजिए।

क्रिया के पदनाम

नये नियम में कलीसिया को दिए गए कुछ पदनाम कलीसिया के देह अर्थात एक जीवित वस्तु के रूप में काम से सम्बधित हैं। पदनामों से पता चलता है कि प्रभु की कलीसिया का उद्देश्य, रूपरेखा, और कार्य क्या है।

जिसे मसीह ने स्थापित किया उसे साधारणतया ''कलीसिया'' कहकर सम्बोधित किया जाता है (कुलुस्सियों 1:18, 24)। इस शब्द का अर्थ है ''लोगों की एक सभा

जो प्रभु की अनुयायी बन गई है।'' इन लोगों को सामूहिक अर्थ में (1 कुरिन्थियों 11:18), स्थानीय अर्थ में (1 कुरिन्थियों 1:2), क्षेत्रीय अर्थ में (1 कुरिन्थियों 16:1), और विश्वव्यापी अर्थ में (इफिसियों 5:23) सज़्बोधित किया जाता है। यह पदनाम उसके मूल अर्थ की घोषणा करता है जिसकी स्थापना मसीह ने की। यह उसके लहू के द्वारा छुटकारा पाए हुए लोगों का समूह है जो उसके लिए जीता है, उसकी आराधना करता है, और उसका कार्य करता है।

कलीसिया के निजी सदस्यों को ''मसीही'' कहकर पुकारा जाता है, क्योंकि वे मसीह के जैसे बनने का यत्न कर रहे हैं। (''मसीही'' शब्द का अर्थ है ''मसीह के जैसा'' या ''मसीह का अनुयायी'')। नाम मसीही चेलों को सबसे पहले अन्ताकिया में दिया गया (प्रेरितों 11:26)। इस नाम के दिये जाने की परिस्थितियां अस्पष्ट हैं, परन्तु इतना सुनिश्चित हो सकता है कि परमेश्वर ने यह नाम अपने लोगों के लिए चुना। यह नाम, नये नियम में तीन बार मिलता है (प्रेरितों 11:26; 26:28; 1 पतरस 4:16)।

बाइबल कलीसिया के सदस्यों को ''पवित्र'' अर्थात संत कहकर भी सज़्बोधित करती है। ये वे लोग हैं जो परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में अलग किये गये हैं। पौलुस ने इफिसियों को यह कहते हुए सज़्बोधित किया ''पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है, उन *पवित्र* और मसीह यीशु में विश्वासी लोगों के नाम जो इफिसुस में हैं'' (इफिसियों 1:1)। किंग जेज़्स के अनुवाद में तीतुस 2:14 में ''विशेष लोग'' है। इस पुस्तक के पीछे दिया हुआ नया नियम ''अपने लिए एक जाति'' कहता है।''पवित्र लोग'' या ''संत'' का मूल अर्थ है ''परमेश्वर के लिए अलग किये हुए।'' परमेश्वर की कलीसिया परमेश्वर के ''अपने लिए एक जाति,'' पवित्र लोग, परमेश्वर के लिए अलग किये हुए लोग जिन पर उसका स्वामित्व है। मसीहियों को पवित्र बुलाहट से बुलाया गया है (2 तीमुथियुस 1:9); उन्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में जीना चाहिए (2 पतरस 3:11), उन्हें अन्त के दिन उसके सामने, ''पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष'' (कुलुस्सियों 1:22ख) उपस्थित होना चाहिए।

बाइबल के कुछ अंग्रेज़ी अनुवादों में मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना रचित सुसमाचार की पुस्तकों के शीर्षकों में ''संत'' है और प्रकाशितवाक्य का शीर्षक ''द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन'' दिया गया है। नये नियम की पुस्तकों के ये शीर्षक मनुष्य की ओर से आये, परमेश्वर की ओर से नहीं। नया नियम मसीह में हर

एक को ''संत'' की उपाधि देता है। कलीसिया को तो ''पवित्र लोगों की सब कलीसियाएं'' तक कहा गया है (1 कुरिन्थियों 14:33)। जब लोग मसीही बन जाते हैं तो उन्हें परमेश्वर के लिए अलग कर दिया जाता है।

इसके अलावा, कलीसिया को मसीह की ''देह'' के रूप में सम्बोधित किया गया है (इफिसियों 1:22, 23)। इस शब्द को कई बार कलीसिया के काम के उदाहरण के लिए प्रयोग किया जाता है (1 कुरिन्थियों 12:12-27) और कई बार पहचान के रूप में, यह बताने के लिए कि कलीसिया वास्तव में क्या है। जब वाक्यांश ''मसीह की देह'' का प्रयोग पदनाम के रूप में किया जाता है तो यह इसके कार्य के साथ-साथ मसीह के साथ इसके सम्बन्ध पर भी ज़ोर डालता है: कलीसिया पृथ्वी पर मसीह की आत्मिक देह है और यह मसीह के साथ देह के रूप में सिर से जुड़ी हुई है। मसीह की इस आत्मिक देह में, निजी मसीहियों को देह के ''अंगों'' के रूप में काम करने के लिए कहा जाता है, हर मसीही इसका अंग है और देह के अंग के रूप में काम करता है। पौलुस ने कुरिन्थुस में कलीसिया के लिए कहा, ''इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो'' (1 कुरिन्थियों 12:27)।

कलीसिया को ''राज्य'' के रूप में भी सम्बोधित किया गया है (प्रेरितों 8:12)। कई बार अभिव्यक्ति ''स्वर्ग का राज्य'' (मत्ती 16:18, 19), और कई बार ''परमेश्वर का राज्य'' (यूहन्ना 3:3) का प्रयोग किया जाता है। दोनों वाक्यांश कलीसिया/राज्य के प्रभुत्व और शासन के आत्मिक स्वभाव को प्रतिबिम्बित करते हैं। कलीसिया मसीह के अनुयायियों का एक समूह है, जिन्होंने पृथ्वी पर परमेश्वर के शासन के आगे समर्पण कर दिया है। मसीह राजा है और वह अपने राज्य अर्थात कलीसिया पर शासन कर रहा है (1 कुरिन्थियों 15:24, 25)। फलस्वरूप, वह कलीसिया का ईश्वरीय सिर, अर्थात राजा है, और यह उसके ईश्वरीय अधिकार से संचालित होती है। कलीसिया के सदस्य यीशु राजा के अधिकार के आगे झुक गये हैं और उसके आत्मिक राज्य के ''नागरिक'' के रूप में रहते हैं (फिलिप्पियों 3:20), यद्यपि निवास वे पृथ्वी पर ही करते हैं।

जो परमेश्वर के राज्य के भाग हैं, उनका वर्णन स्वर्ग के राज्य के ''नागरिक'' के रूप में किया जाता है (मत्ती 16:18, 19)। पौलुस ने कहा, ''हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के आने की बाट जोह रहे हैं'' (फिलिप्पियों 3:20)। उसने यह भी लिखा, ''इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे,

परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गये हो, और प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नेंव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गये हो'' (इफिसियों 2:19, 20)। मसीह हमारा राजा है (1 कुरिन्थियों 15:24, 25), और उसके राज्य में केवल वे ही हैं जो मसीह के शासन के अधीन रहते हैं (मत्ती 7:21)।

मसीही लोग अनन्त राज्य के नागरिक हैं, जिसकी बात पुराने नियम में दानिय्येल ने की थी (दानिय्येल 2:44)। इब्रानियों के लेखक ने एक ''न हिलाए जा सकने वाले'' राज्य का वर्णन किया है: ''इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें,...'' (इब्रानियों 12:28)। अगली बार जब आप अपने आप से पूछें कि आप आज से एक हज़ार वर्ष के बाद कहां होंगे, यदि आप मसीही होंगे, तो आप अपने आपको बता सकते हैं, ''मैं अनन्त राज्य में होऊंगा!'' परमेश्वर का राज्य ऐसा नहीं है कि यह आज हो और कल नहीं अर्थात यह तो अनन्त राज्य है जो सदा तक रहेगा।

स्वामित्व के पदनाम

नये नियम में कलीसिया को सम्बोधित करने के तीन ढंग उस अधिकार- सम्बन्ध के प्रकार पर ज़ोर देते हैं जो परमेश्वर और मसीह का कलीसिया से है। इन वाक्यांशों से स्वामित्व और नेतृत्व की बात पता चलती है।

पहला, कलीसिया को ''मसीह की कलीसिया'' के रूप में सम्बोधित किया जाता है। पौलुस ने रोमियों को अपने पत्र के अन्त में, अखाया की कलीसिया की ओर से सलाम भेजा: ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार'' (रोमियों 16:16ख)। यह पदनाम कलीसिया के स्वामित्व और पहचान पर ज़ोर देता है। कलीसिया मसीह की है, क्योंकि मसीह ने इसकी स्थापना की, इसे मोल लिया, इसका मालिक है व सिर बनकर इसकी सेवा करता है। जब कोई मसीह में परिवर्तित होता है, तो वह मसीह का हो जाता है (1 कुरिन्थियों 6:20)। उसकी पहचान मसीह से इतनी अच्छी तरह से हो जाती है कि उसे मसीही अर्थात मसीह का एक अनुयायी कहा जाता है (प्रेरितों 11:26; 26:28; 1 पतरस 4:16)। फिर, मसीह के अनुयायियों की विशेष सभा को, यह दिखाने के लिए कि कलीसिया कौन है, इसका मालिक कौन है, और इसका सदस्य कौन है, मसीह की कलीसिया पुकारा जाता है।

दूसरा, कलीसिया को ''परमेश्वर की कलीसिया'' कहकर सम्बोधित किया जाता है (1 कुरिन्थियों 1:2)। यदि नये नियम में इसे मसीह की कलीसिया के रूप में सम्बोधित किया जाता है तो हमने अपेक्षा करनी थी कि इसे परमेश्वर की कलीसिया कहकर भी सम्बोधित किया जाता, क्योंकि मसीह ने कहा कि वह और उसका पिता एक हैं (यूहन्ना 10:30)। परमेश्वर ने जगत की नींव रखने से पहले कलीसिया की योजना बनाई (इफिसियों 3:10, 11)। उसने कलीसिया को तैयार करने के लिए (मत्ती 16:18) और इसे अपने लहू से खरीदने के लिए (प्रेरितों 20:28) मसीह को संसार में भेजा। जिस प्रकार क्रूस पर संसार को अपने साथ मिलाने के लिए परमेश्वर मसीह में था (2 कुरिन्थियों 5:19), उसी प्रकार कलीसिया की स्थापना और उसको खरीदने के लिए भी परमेश्वर मसीह के साथ था।

तीसरा, कलीसिया के सदस्यों का ''गुलामों'' अथवा ''दासों'' के रूप में वर्णन किया गया है। जो मसीह के प्रति समर्पण कर देते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं, वे दास हैं। जब नया नियम लिखा गया था, उस समय ''गुलाम/मालिक'' सम्बन्ध रोमी साम्राज्य के समाज का एक अंग था। एक गुलाम पूरी तरह से अपने मालिक के अधीन होता था। उसे कोई अधिकार नहीं होता था और न ही उसकी कोई वास्तविक संपत्ति होती थी। वह अपने आप का भी नहीं होता था। आश्चर्य नहीं कि मसीह के प्रति हमारे समर्पण और उसके वचन के अधीन होने पर हमारे जीवन के लिए इस शब्द और उदाहरण का प्रयोग किया जाता है। पौलुस ने लिखा, ''यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो, मसीह का दास न होता'' (गलतियों 1:10ख; देखिए फिलिप्पियों 1:1)। उसने आगे कहा, ''सो हम कल्पनाओं को, हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं'' (2 कुरिन्थियों 10:5)।

मसीही लोग, जो दावा करते हैं कि मसीह उनका प्रभु है, अब अपने जीवनों के प्रभु नहीं बने रह सकते। उनके लिए अपनी इच्छाओं को ''क्रूस पर चढ़ाना'' आवश्यक है। अर्थात, कि वे अपनी पाप भरी मानवीय इच्छाओं का नाश करें और अपने जीवनों में परमेश्वर की आज्ञाओं को डाल दें। पौलुस ने कहा, ''पर ऐसा न हो, कि मैं किसी बात का घमण्ड करूं केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं'' (गलतियों 6:14)। उसने और कहा, ''आगे को कोई मुझे दुख न दे, क्योंकि मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिए फिरता हूं'' (गलतियों 6:17)।

स बन्ध के पदनाम

कई प्रकार से नया नियम कलीसिया को सम्बोधित करते हुए सम्बन्ध की बात पर ज़ोर देता है। यही अपेक्षित है, क्योंकि प्रभु की कलीसिया का सदस्य बनने से अनेक सम्बन्ध जुड़ते हैं।

गुलाम/मालिक और देह/सिर के सम्बन्ध के अलावा बहुत से सम्बन्ध हैं, जिनका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। ''मसीही'' शब्द स्वयं उस मधुर सम्बन्ध को व्यक्त करता है जो कलीसिया के सदस्यों का अपने प्रभु के साथ है। वे उसके अनुयायी हैं; वे उसके लिए जीते हैं और उसका नाम पहनते हैं। पौलुस प्रेरित ने एक मसीही बनने के बाद अपने धार्मिक जीवन को इन प्रसिद्ध शब्दों में व्यक्त किया ''क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है'' (फिलिप्पियों 1:21)। मसीह पौलुस के जीवन में केवल प्रथम ही नहीं था बल्कि मसीह उसका जीवन *था*! पौलुस के जीवन का जोड़ और निचोड़ मसीह था। वह वास्तव में एक मसीही था।

नया नियम कलीसिया को ''परमेश्वर का घराना'' कहकर भी वर्णन करता है। पौलुस ने कहा, कि मसीही लोग ''परमेश्वर के घराने के'' हैं (इफिसियों 2:19)। उसने तीमुथियुस को बताया कि वह उसे इसलिए लिख रहा है ताकि वह जान ले कि उसे ''परमेश्वर का घर, जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है'' में कैसे बर्ताव करना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:15)। मसीह के प्रति मन परिवर्तन के समय, परमेश्वर हमें अपनी संतान के रूप में गोद ले लेता है, हमें परिवार के अधिकार देता है और मसीह के साथ हमें अनन्त जीवन का वारिस बनाता है (रोमियों 8:15-17; इफिसियों 1:5)। मसीहियों का एक स्वर्गीय पिता है जिसके आगे वे प्रार्थना करते हैं और एक प्रिय उद्धारकर्ता बड़ा भाई यीशु है, जिसके द्वारा वे प्रार्थना करते हैं। भाई और बहनों के रूप में, वे एक दूसरे से प्रेम करते, उनकी सहायता करते, और उन्हें उत्साहित करते हैं (प्रेरितों 2:44)।

कलीसिया के सदस्यों को ''परमेश्वर की संतान'' कहकर सम्बोधित किया गया है। उनका परमेश्वर के साथ एक विशेष सम्बन्ध है; वह उनका पिता है, और वे उसकी संतान हैं। जब विश्वासी लोग मसीह में बपतिस्मा लेते हैं, तो उन्हें परमेश्वर के ''पुत्र'' के रूप में गोद लिया जाता है (इफिसियों 1:5)। संतान के रूप में मसीहियों को अनन्त विरासत (इफिसियों 1:11) और परमेश्वर के सांसारिक परिवार की शक्ति और समर्थन मिला है (1 तीमुथियुस 3:15; इफिसियों 2:19-22)। इस आत्मिक,

स्वर्गीय परिवार में, परमेश्वर पिता है (मत्ती 6:9) यीशु बड़ा भाई है (रोमियों 8:17) और सभी मसीही भाई तथा बहनें हैं (2 पतरस 3:15; 1 यूहन्ना 2:8-11)।

अपनी संतान के लिए परमेश्वर के मन में विशेष प्रेम है (1 यूहन्ना 3:1)। वह उन्हें शैतान से बचाता है और उनकी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। यीशु ने सिखाया कि यदि एक सांसारिक पिता बच्चों को अच्छी वस्तुएं देता है, तो फिर सर्वशक्तिमान परमेश्वर जो स्वर्ग में सज़्पूर्ण पिता के बच्चे उससे अपेक्षा रख सकते हैं कि जब वे उससे मांगें तो वह उन्हें और ज़ी अच्छी वस्तुएं दे! (देखिए मत्ती 7:11)।

आरज़्भिक कलीसिया के सदस्य एक दूसरे को केवल भाई ही नहीं, बल्कि मित्र भी मानते थे (2 पतरस 3:15; 3 यूहन्ना 15) जो मिल जुल कर भाइचारे से रहते थे। मसीही लोग मित्रता का अति उत्तम नमूना हैं।

यूहन्ना ने अपनी तीसरी पत्री के अन्त में लिखा "तुझे शांति मिलती रहे। यहां के मित्र तुझे नमस्कार करते हैं। वहां के मित्रों से नाम ले लेकर नमस्कार कह देना" (3 यूहन्ना 15)। उसने अपने आस-पास के मसीहियों को "मित्र" कहकर पुकारा, और उन मसीहियों को भी "मित्र" कहा जिन्हें उसका पत्र मिलना था। यीशु ने अपने चेलों को मित्र कहा और कोई संदेह नहीं कि यूहन्ना ने इस शब्द को यीशु के उदाहरण से ही लिया। यीशु ने अपने चेलों से कहा था:

> इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे। जो कुछ मैं तुज़्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो। अब से मैं तुज़्हें दास न कहूंगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता है; परन्तु मैंने तुज़्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैंने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुज़्हें बता दीं (यूहन्ना 15:13-15)।

किसी ने कहा है, "मित्र वह है, जो तब भी आपके साथ रहता है जब सभी आपका साथ छोड़ दें।" यीशु ऐसा ही मित्र है। जब कोई भी हमारी सहायता नहीं कर सकता था, उसने हमारे लिए अपना जीवन दे दिया। मसीही लोगों को ऐसे ही एक-दूसरे के मित्र बनना चाहिए (1 यूहन्ना 3:16)। मसीही लोग "मित्र" हैं।

पहली सदी की कलीसिया को आम तौर पर "प्रभु के चेलों" (प्रेरितों 9:1) या केवल "चेले" (प्रेरितों 9:26; 11:26) के रूप में जाना जाता था। "चेले" शब्द का अर्थ है सीखने वाला या अनुयायी; इससे दो प्रकार के सज़्बन्धों का पता चलता है जो एक मसीही और प्रज़ु के बीच हैं। चेला वह है जो अपने आप से महान के आगे

समर्पण कर देता है, जिसने अपने से किसी महान से सीखा है और जो निर्देश और अनुसरण के द्वारा उस महान से निरन्तर सीखने की चाह रखता है। वह केवल सुनने वाला ही नहीं है; वह सीखने और अध्ययन करने वाला भी है। उसका प्रभु उसका मालिक, उसका गुरु है (यूहन्ना 13:13)।

''चेले'' शब्द का प्रयोग सुसमाचारों में कई बार हुआ है। प्रेरितों के काम में इसका इस्तेमाल कई बार मिलता है, परन्तु पत्रियों अथवा प्रकाशितवाक्य में नज़र नहीं आता। शायद शब्दावली में स्पष्ट बदलाव का कारण सुसमाचारों से प्रेरितों के काम से पत्रियों की ओर जाते हुए कि मसीह के पृथ्वी पर रहते समय, उसके अनुयायियों को उससे जुड़े होने के कारण ''चेले'' पुकारा जाता था। बाद में, प्रेरितों की पुस्तक, पत्रियों, और प्रकाशितवाक्य में उनकी पवित्र बुलाहट के कारण उन्हें ''पवित्र'' (अंग्रेज़ी की बाइबल में संत) या एक दूसरे से सम्बन्ध में ''भाई'' कहकर पुकारा जाता है।

मसीह ने ऊपर उठाए जाने से पहले अपने प्रेरितों को एक महान आज्ञा (ग्रेट कमीशन) दी, ''इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और उन्हें वे सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ; और देखो मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:19, 20)। इस प्रकार, उसने शब्द ''चेला'' का निरन्तर उपयोग किया, यद्यपि यह नये नियम के पिछले भाग में आम तौर पर नहीं मिलता।

चेला वचन पर चलने वाला होता है। याकूब ने कहा, ''परन्तु वचन पर चलने वाले बनो और केवल सुनने वाले ही नहीं ...'' (याकूब 1:22)। एक चेला किसी विद्यार्थी से बढ़कर है; वह मसीह का अनुकारक है, मसीह का अनुयायी है।

एक और दृष्टिकोण से, नये नियम की कलीसिया को ''परमेश्वर का मन्दिर'' कहा जाता है। पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीहियों को कहा, ''क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?'' (1 कुरिन्थियों 3:16)। मसीहियों की सभा के रूप में कलीसिया परमेश्वर के निवास स्थान का रूप ले लेती है। आज परमेश्वर का पवित्र स्थान जीवित देह अर्थात कलीसिया है। इस कारण निजी मसीहियों को ''पवित्र'' अर्थात संत कहा जाता है क्योंकि उनको सुसमाचार के द्वारा पवित्र काम करने और परमेश्वर का निवास स्थान बनने के लिए अलग किया गया है (1 कुरिन्थियों 1:2)।

एक पद में, नया नियम कलीसिया को ''पहिलौठों की कलीसिया'' कहकर सम्बोधित करता है (इब्रानियों 12:23)। कलीसिया का भविष्य के साथ गहरा सम्बन्ध

है क्योंकि इसके हर सदस्य का नाम ''स्वर्ग में दर्ज'' है। एक मसीही के भविष्य में उस अनन्त आशा के कारण जो मसीह उसे देता है, भय और चिन्ता नहीं है। इस प्रकार के पदनाम यह समझ देते हैं कि कलीसिया क्या है और कलीसिया को कैसे रहना चाहिए। वे मसीहियों को बताते हैं कि पृथ्वी पर कैसे रहना है और यह कि उद्धार पाए हुए लोग भविष्य में परमेश्वर के साथ कैसे रहेंगे।

सारांश

परमेश्वर ने अब्राम का नाम बदलकर इब्राहीम रख दिया क्योंकि नाम अब्राम अब उसके अनुकूल नहीं था। अब्राम को बताया गया था कि उसने बहुतों का पिता होना था (उत्पत्ति 17:5)। नाम अब्राम का अर्थ है ''उन्नत पिता।'' अब्राम एक अर्थपूर्ण नाम था परन्तु इससे यह पता नहीं चलता था कि अब्राम का भविष्य क्या होना था। नाम इब्राहीम का अर्थ है ''बहुतों का पिता,'' उस व्यक्ति के लिए जिसने एक राष्ट्र का पिता होना था, यही नाम सही था। जो पदनाम परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया उसका परमेश्वर और इब्राहीम के लिए कुछ अर्थ था। इसी प्रकार, जो पदनाम परमेश्वर ने कलीसिया को दिए उनका परमेश्वर के लिए कुछ अर्थ है, और उनका हमारे लिए भी अर्थ होना चाहिए।

नये नियम की कलीसिया को सम्बोधित करने के लिए उचित ढंग दिए गए हैं, और उनका इस्तेमाल किया जाना चाहिए। कलीसिया के लिए बाइबल से असम्बद्ध पदनामों के उपयोग से हम इसकी पहचान को गड़बड़ा देते हैं। यदि लोगों का एक समूह नये नियम की कलीसिया बनना चाहता है और चाहता है कि उसे नये नियम की कलीसिया के रूप में जाना जाए, तो उन्हें कलीसिया के लिए नये नियम में दिये पदनामों का इस्तेमाल करना चाहिए। कोई कलीसिया अपने आप को नये नियम की कलीसिया तो कह सकती है परन्तु हो सकता है कि वह नये नियम की कलीसिया न हो; परन्तु यदि यह सममुच नये नियम की कलीसिया है, तो इसे अपने आप को नये नियम की उचित भाषा से सम्बोधित करना चाहिए।

आज परमेश्वर की कलीसिया होने की वचनबद्धता को सदस्यों के पदनाम और वे अपने आप को किस प्रकार दिखाते हैं, से भी देखा जाना चाहिए। उन पदनामों का इस्तेमाल जो परमेश्वर ने अपनी कलीसिया के लिए किया कम से कम उन मसीहियों के लिए आरम्भिक स्थान है जो अपने जीवनों में वही करने की कोशिश कर रहे हैं जो

परमेश्वर अपनी कलीसिया को चाहता है कि वह बने और करे। जब मसीही लोग अपने आप को वही नाम देते हैं जो परमेश्वर ने कलीसिया को दिया, तो वे उस तरफ जाते हुए जो परमेश्वर उन्हें बनाना चाहता है कि वे बनें, अपने आपको सही पथ पर चला रहे होते हैं (पृष्ठ 253 पर परिशिष्ट 3 देखिए)।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 240 पर)

1. कलीसिया के संदर्भ में नये नियम में ''राज्य'' शब्द का इस्तेमाल किस प्रकार किया गया है?
2. पौलुस कलीसिया को ''मसीह की कलीसिया'' कहकर क्यों सम्बोधित करता है? कलीसिया के स्वामित्व को बताते हुए अन्य कौन से पदनाम हैं?
3. हमें कलीसिया के लिए उन्हीं पदनामों का प्रयोग क्यों करना चाहिए जो नये नियम में दिए गये हैं?
4. जब हम कलीसिया को बाइबल के ढंग से सम्बोधित करते हैं तो क्या प्राप्त होता है?
5. कलीसिया को ''परमेश्वर का घराना'' क्यों कहा जाता है?
6. ''मसीही'' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है? जब कोई एक मसीही के रूप में जीवन व्यतीत करना है तो उसका जीवन कैसा होता है?
7. एक मसीही के रूप में फिलिप्पियों 1:21 में पौलुस अपने जीवन का वर्णन किस प्रकार करता है?
8. ''परमेश्वर की संतान'' होने का क्या अर्थ है? परमेश्वर के साथ इस सम्बन्ध की विशेषताएं बताएं।
9. एक चेले की विशेषताएं बताएं।
10. ''पवित्र'' अर्थात संत शब्द का मूल अर्थ बताएं। कोई व्यक्ति ''पवित्र'' कब बनता है? एक संत की विशेषताएं बताएं।

---

[1]नये नियम में कलीसिया को साधारणतः भेड़शाला (यूहन्ना 10:1), दाख की बारी (मत्ती 20:1), या अनमोल मोती (मत्ती 13:45, 46) के रूप में चित्रित किया जाता है। ऐसे चित्र

कलीसिया को अच्छी तरह समझने में हमारी सहायता करते हैं; परन्तु वे उदाहरण ही हैं, न कि कलीसिया की पहचान के साधन। [2]"पदनाम," जैसे यहां प्रयोग किया गया है, से भाव कलीसिया को बाइबल के ढंग से सम्बोधित करना है।